संस्कृत की मधुरिमा और भारतीय ज्ञान-परम्परा का गौरव बनी चतुर्थ वाग्वर्धिनी सभा, गीता ओलम्पियाड के विजेता सम्मानित



सुदेश कुमार मलहोत्रा, अम्बाला छावनी, 28 अक्टूबर 2026। संस्कृत केवल प्राचीन ज्ञान की संवाहिका ही नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति, जीवन-दर्शन और संस्कारों की अमूल्य निधि भी है। इसी भाषा के व्यावहारिक प्रयोग को प्रोत्साहित करने, विद्यार्थियों में सम्भाषण-कौशल विकसित करने तथा उनकी प्रतिभा को मंच प्रदान करने के उद्देश्य से श्री दीवान कृष्ण किशोर सनातन धर्म आदर्श संस्कृत महाविद्यालय, अम्बाला छावनी में चतुर्थ वाग्वर्धिनी सभा का आयोजन उत्साह एवं गरिमामय वातावरण में किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. विष्णु दत्त शर्मा ने की, जबकि मुख्य वक्ता के रूप में वेद विभाग के प्रभारी डॉ. नितिन कुमार जोशी ने विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया। इस अवसर पर केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित गीता ओलम्पियाड में पुरस्कार प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को भी सम्मानित किया गया। मुख्य वक्ता डॉ. नितिन कुमार जोशी ने अपने सम्बोधन में कहा कि वाग्वर्धिनी सभा विद्यार्थियों की प्रतिभा को निखारने, आत्मविश्वास बढ़ाने तथा विचारों को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करने का एक महत्त्वपूर्ण मंच है। ऐसी गतिविधियों से विद्यार्थियों में भाषण-कला, तार्किक क्षमता, संवाद-कौशल और अभिव्यक्ति की स्पष्टता विकसित होती है। उन्होंने कहा कि संस्कृत केवल शास्त्रों के अध्ययन तक सीमित भाषा नहीं है, बल्कि इसका प्रयोग दैनिक जीवन में भी सहजता से किया जा सकता है। कार्यक्रम के दौरान केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित गीता ओलम्पियाड में पुरस्कार प्राप्त करने वाले महाविद्यालय के विद्यार्थियों दीपांशु पवार, हरप्रीत कौर तथा सोनाथी भारती को सम्मानित किया गया। प्राचार्य डॉ. विष्णु दत्त शर्मा ने विद्यार्थियों को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की तथा अन्य विद्यार्थियों को भी ऐसी ज्ञानवर्धक प्रतियोगिताओं में उत्साहपूर्वक भाग लेने के लिए प्रेरित किया। इस अवसर पर यह संदेश दिया गया कि श्रीमद्भगवद्गीता का अध्ययन केवल परीक्षा या प्रतियोगिता तक सीमित न रहकर विद्यार्थियों के जीवन में नैतिकता, अनुशासन, कर्तव्यपरायणता और सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने का माध्यम बनना चाहिए।